SHRI BHARAT BHUSHAN TYAGI

Shri Bharat Bhushan Tyagi is a farmer, educator and trainer. He has integrated his observations and understanding of nature with his knowledge of farming creating an all inclusive Universal Framework for Agriculture —"Sah-Astitva Moolak Aavartansheel Krishi or Samak.

2. Born on January 4, 1954, at village Beehta in Uttar Pradesh, Shri Tyagi completed B.Sc from the Delhi University in 1973-74. Thereafter, he came back to his village inspired by his parents to work for the development and prosperity of the village. He observed the lack of social justice and poor agricultural practices in villages. He committed to farming in 1987 and fervently sought solutions to not only save the environment but also to increase the agriculture productivity to support the increasing population and to increase the income of the farmer. Thus began the ten year struggle of studying the techniques and methods of farming, and finally observing and exploring the production laws of Nature. In 1997, he came across "Madhyastha Darshan Saha Astitvavad" which influenced him in a profound way and helped him see Nature as it is. Integrating this with his study and experience of farming brought to him the success and solutions he was looking for. He organizes weekly training for farmers at his farm at Beehta, Bulandshahr.

3. Shri Tyagi experienced that human is a unit of nature and nature alone can solve all of its problems. Nature grows multiple things together, and is complementary, not competitive (meaning Saha-Astitva). Nature has rules, checks and balances governing insects, weeds, multiple crops, seasons, distance, timing among others, and there is an organization or arrangement (vyavastha) based on these. If one lives in accordance with these rules, prosperity and abundance follows because of increase in density, diversity, quantity with quality of the produce. He also observed that to experience abundance of nature, one first has to understand nature, make preparations and plans accordingly and then act as per the Understanding before Experiencing. He formulated all this knowledge into his model which increases the economic profitability of the farmer by 4 to 5 times.

4. Shri Tyagi created "Samak" and started sharing his knowledge and understanding with the world. This model has received attention and acceptance from all across India and around the world including countries like Netherlands, Germany, Mauritius, Australia to name a few. Over the last 10 years, he has educated over 80,000 farmers, scientists, intellectuals and well educated and inquisitive citizenry.

5. Shri Tyagi has been the key resource person of National Centre of Organic Farming (NCOF)-Ghaziabad, IARI-Delhi, IIFSR-Modipuram, Nirmal Hindon Abhiyaan, NABARD, Rural Banks among others, and has trained and implemented projects in many universities like AMITY, SGT, TMU, etc.

6. Shri Tyagi has been received numerous accolades and awards globally and nationally, among which there are awards by Organic World Congress (2017), Multiple Best Farmer Awards and Progressive Farmer Awards to name a few.

पद्म श्री

श्री भारत भूषण त्यागी

श्री भारत भूषण त्यागी एक किसान, शिक्षक और प्रशिक्षक हैं। आपने सह-अस्तित्व मूलक आवर्तनशील कृषि या समक के लिए एक सर्वसमावेशी सार्वभौमिक कृषि ढांचा तैयार करते हुए खेती की जानकारी के साथ अपना दृष्टिकोण और प्रकृति के बारे में ज्ञान को एकीकृत किया है।

2. आपका जन्म 4 जनवरी, 1954 को उत्तर प्रदेश के ग्राम बीहटा में हुआ था। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से 1973-74 में बी.एससी.पूरी की। इसके बाद, आप अपने माता-पिता से प्रेरित होकर गांव के विकास और समृद्धि के लिए काम करने के लिए अपने गांव वापस आ गए। आपने गांवों में सामाजिक न्याय की कमी और खराब कृषि पद्धतियों को देखा। आप 1987 में खेती करने के लिए प्रतिबद्ध हो गए और काफी उत्सुकता से न केवल पर्यावरण को बचाने बल्कि बढ़ती आबादी की सहायता के लिए कृषि उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की आय में वृद्धि करने के समाधान ढूंढने के कार्य में लग गए। इस प्रकार तकनीक और खेती के तरीकों का अध्ययन करने के दस साल के संघर्ष कीशुरूआत हुईऔर अंत में आपने उत्पादन से संबंधित प्रकृति के नियमों का पता लगा लिया। वर्ष 1997 मेंआपको"मध्यस्था दर्शन सह अस्तित्ववाद" की जानकारी प्राप्त हुई जिसने आपको काफी गहराई तक प्रभावित किया और उससे आपको प्रकृति को यथावत रूप में समझने में मदद मिली। अपने अध्ययन और खेती के अनुभव के साथ इसके एकीकरण से आपको अपेक्षित सफलता और समाधान प्राप्त हुए। आप बीहटा, बुलन्दशहर स्थित अपने खेत में किसानों के लिए साप्ताहिक प्रशिक्षण का आयोजन करते हैं।

3. आपने अनुभव किया कि मानव प्रकृति की एक इकाई है और प्रकृति अकेले अपनी सभी समस्याओं का समाधान कर सकती है। प्रकृति के साथ कई चीजों का विकास होता है और यह पूरक है, प्रतिस्पर्धी नहीं (अर्थात् सह-अस्तित्व) है। कीड़े-मकोड़ों, खर-पतवार, बहु-फसलों, मौसम, दूरी, समय आदि पर प्रकृति के नियंत्रण और संतुलन का नियम लागू है, और इन सब के आधार पर एक संरचना या व्यवस्था बनी हुई है। यदि कोई व्यक्ति इन नियमों का पालन करता है तो घनत्व,उत्पाद की गुणवत्ता के साथ-साथ विविधता,मात्रा में वृद्धि से समृद्धि और प्रचुरता आती है। आपने यह भी देखा कि प्रकृति की विपुलता का अनुभव करने के लिए, सबसे पहले प्रकृति को समझना जरूरी है और उसके अनुसार तैयारी और योजना बनाने और फिर अनुभव करने से पहले समझ के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता है। आपने यह सब ज्ञान एक मॉडल के रूप में इक्ठ्ठा किया जिससे किसान के आर्थिक लाभ में 4 से 5 गुणा वृद्धि हुई है।

4. आपने "समक" का सृजन किया और दुनिया के साथ अपने ज्ञान और समझ को साझा करना शुरू कर दिया। इस मॉडल को भारत भर में तथा नीदरलैंड, जर्मनी, मॉरीशस, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों सहित पूरी दुनिया में महत्व और मान्यता मिली है। पिछले 10 वर्षों में, आपने 80,000 से अधिक किसानों, वैज्ञानिकों, बुद्धिजीवियों, सुशिक्षित और जिज्ञासु नागरिकों को जानकारी प्रदान की है।

5. आप नेशनल सेंटर ऑफ आर्गेनिक फार्मिंग गाजियाबाद, आईएआरआई-दिल्ली, आईआईएफएसआर-मोदीपुरम, निर्मल हिंडन अभियान, नाबार्ड, ग्रामीण बैंकों के प्रमुख रिसोर्स व्यक्ति हैं, और एमिटी, एसजीटी, टीएमयू आदि जैसे कई विश्वविद्यालयों में आपने प्रशिक्षण दिया है और परियोजनाएं कार्यान्वित की हैं।

6. आपने दुनिया भर में और राष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किए हैं, जिनमें ऑर्गेनिक वर्ल्ड कांग्रेस (2017), मल्टिपल बेस्ट फार्मर अवार्ड और प्रोग्रेसिव फार्मर अवार्ड आदि शामिल हैं।